राशिद हुसैन राही

क्यों आ रहे हैं हाल मेरा पूछने को लोग।

क्या आज़मा रहे हैं मेरे हौसले को लोग।।

ताबीर कैसे पाएंगे फिर अपने ख्वाब की।

जब तोड़ते रहेंगे यूंही आइने को लोग।।

बादल फटे तो कितनी ही जानें चली गईं।

बरसों न भूल पाएंगे इस हादसे को लोग।।

फिर कैसे हो सकेंगे हकीकत से आशना।

देंगे पनाह दिल में अगर वाहिमे को लोग।।

हालांकि अपने शहर में फनकार हैं बहुत।

लेकिन सराहते नहीं इक - दूसरे को लोग।।

आवाज दे रही हैं मुझे मंजिलें मगर।

रोके खड़े हुए है मेरे रास्ते को लोग।।

' राही ' मैं कह रहा हूँ हवाएं बदल गईं।

तैयार ही नहीं हैं मगर मानने को लोग।।

खामोश तबीयत है मासूम नज़र अपनी।

यूं आँख में रखता में रखता है मुझको ये नगर अपनी।।

यूं मेरी मुहब्बत से मानूस है ये दुनिया।

मैं अच्छी ही से रखता हूं हर लम्हा नज़र अपनी।।

ऐसा गमे दुनिया ने घेरा है मेरे दिल को।

रहती ही नहीं मुझको इक पल भी खबर अपनी।।

क्या तुमको सुनाऊँ मैं रुदाद मुहब्बत की।

हालत ही अजब - सी है अब शामो सहर अपनी।।

देखे कोई लाचारी ज़रदार की महफिल में।

थी सारी खता उसकी कहलाई मगर अपनी।।

वह फख्र के काबिल हैं आलामो मसाइब में।

जो जिन्दगी करते हैं हंस - हंस के बसर अपनी।।

मैं सोचता रहता हूँ दिन - रात यही राही।

तय कैसे करूं आखिर मंजिल का सफर अपनी।।

एमन जई जलाल नगर, शाहजहांपुर

 ISSN:2583-8849